International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.in
Volume 2; Issue 1; January 2017; Page No. 47-48

उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की रूचि का तुलनात्मक अध्ययन

पूनम सिंह, डॉ0 छाया श्रीवास्तव

प्रवक्ता, श्रीराम कृष्ण कॉलेज ऑफ एजुकेशन, सतना, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

वर्तमान समय में बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा की व्यवस्था एक ही शिक्षण संस्था में एक ही स्थान पर किया जाता है। कुछ विद्वानों का विचार है कि सह–शिक्षा में पूरी तरह समान पाठ्यक्रम का होना आवश्यक नहीं है। बालक और बालिकाओं की रूचियों एवं अभिक्षमताओं में कुछ अन्तर होता है, इसलिए उनके पाठ्यक्रम में भी अन्तर होना आवश्यक हो जाता है। जैसे सह–शिक्षण संस्थाओं में बालकों के लिए कृषि, तकनीकी, सैन्य विज्ञान आदि विषय और बालिकाओं के लिए गृह विज्ञान, सिलाई, चित्रकारी और संगीत आदि विषय रखे जा सकते हैं। इस तरह पाठ्यक्रम में विविधता का कारण बालक एवं बालिकाओं की रूचि में अन्तर होना है। यह शोध उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की रूचि का तुलनात्मक अध्ययन है जिसका निष्कप्र यह बताता है कि बालक एवं बालिकाओं की रूचि में अन्तर पाया जाता है।

मूल शब्दः उच्चतर माध्यमिक स्तर, छात्र–छात्राएँ, रुचि, तुलनात्मक।

प्रस्तावना

शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक बालक एवं बालिका का मौलिक अधिकार है। शिक्षा की आवश्यकता एक बालक को जितनी होती है उतनी ही एक बालिका को भी है। हमारे देश में नारी–शिक्षा संसार के अन्य देशे की अपेक्षा अत्यन्त प्राचीन एवं महत्वपूर्ण है। विकाशील देशों में स्त्रियों को पुरूषों के साथ पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक जिम्मेदारियों का पालन करना पड़ता है। अतः उनकी शिक्षा की अवहेलना नहीं की जा सकती। स्त्री शिक्षा की अवहेलना करना समाज की भावी पीढ़ी के साथ अन्याय करना है। स्त्री समाज का आधार है, उन्हें शिक्षित करना पूरे समाज को शिक्षित करना है। नेपोलियन ने कहा था– "मुझे सुशिक्षित माताएँ दो, मैं ऐ सुशिक्षित राष्ट्र का निर्माण कर दूँगा।" प्रतिरक्षा मंत्री जगजीवन राम ने एक बार कहा है– "एक कन्या को पढ़ा देने से आगे आने वाली पीढ़ी सुशिक्षित होंगी।" अतः स्त्री–शिक्षा का समुचित प्रबन्ध करना राष्ट्र की अनिवार्य आवश्यकता है। बालक की प्रारम्भिक पाठशाला घर है और माता ही उसकी प्रथम शिक्षिका है। किसी ने कहा है– "जो हाथ पालने को झुलाता है, वह संसार का शासन भी करता है।" स्त्रियाँ परिवार का मेरूदंड है। इनकी प्रगति पर ही हमारा सर्वांगीण विकास निर्भर करता है। शिक्षित स्त्रियाँ न केवल परिवार की उन्नति करती हैं बल्कि समाज को भी सुसंस्कृत और उन्नतिशील बनाने में सहायता प्रदान करती हैं। देश और समाज की प्रगति के लिए उन्हें समुचित शिक्षा देना अनिवार्य है। पश्चिमी देशों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्त्रियाँ ही शिशुओं को शिक्षा देने के लिए सर्वरूपेण उपयुक्त है। विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग ने स्त्री–शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि स्त्री–शिक्षा के बिना लोग शिक्षित नहीं हो सकते। स्त्रियों का कार्यक्षेत्र घर तक ही सीमित न रहना चाहिए क्योंकि विभिन्न परिस्थितियों के कारण डहनें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने की आवश्यकता हो सकती है। अतः स्त्रियों के लिए शिक्षा ऐसी रूप–रेखा बनाई जाय जो उनके जीवन को सफल बनाने में सहायक हो। यदि समाज का नव–निर्माण करना है तो स्त्रियों को वास्तविक और प्रभावपूर्ण ढंग से पुरूषों के समान शिक्षा प्राप्त करने का अवसर देना चाहिए।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व–रूचि से बढ़कर कोई चीज नहीं है तथा इसके अभाव में शिक्षक के सभी प्रयास विफल हो जाते हैं। अतः कुछ भी पढ़ाने से पूर्व शिक्षक को छात्रों में रूचि जागृत करनी चाहिए तथा इसे बराबर बनाये रखना चाहिए। इसीलिए किसी ने कहा है कि– "Interest is the greatest word in the dictionary of Education" रूचियाँ केवल यही नियन्त्रण नहीं करती कि अवधान को क्या आकर्षित करता है अपितु वे यह भी नियन्त्रणस करती है कि अवधान को क्या स्थिर किए रहता है। मन्द से मन्द विद्यार्थी भी क्लास में अपनी कुर्सी के सिरे पर बैठ जाता है, जब क्लास में शिक्षक सिनेमा की बात करते हैं। व्यक्ति स्वाष्टि भोजन पर रूचि के कारण ही टूट पड़ता है, भले ही उसे भूख न हो। इसी प्रकार प्रोफेसर, डॉक्टर, तथा क्लर्क अपनी–अपनी रूचियों की वस्तुओं की ओर ही अवधान देते हैं। उदाहरणार्थ दर्शनशास्त्र का प्रोफेसर जिस बात से रूचि रखेगा उसमें जीवशास्त्र का प्रोफेसर रूचि नहीं लेगा। वास्तविक बात यह है कि जब किसी वस्तु में रूचि उत्पन्न हो जाती है तब वह हमारे अवधान के केन्द्र में जा जाती है। एक उदाहरण से और स्पष्ट किया जा सकता है– एक छात्र मेडिकल की मुख्य शाखा में जाना चाहता था लेकिन उसे पशु–शाखा मिली। वे–मन से माता–पिता के दबाव में उसने प्रवेश ले लिया तथा हॉस्टल में रहने लगा। परीक्षा के दिनों में उसने प्रयोगात्मक परीक्षा की तैयारी नहीं की लेकिन दोस्तों के कहने पर वह परीक्षा देने चला गया। परीक्षक ने पूछा बैल के मुँह में कितने दाँत होते हैं। छात्र ने लापरवाही से कहा बत्तीस। परीक्षक ने नाराज हुए बिना सामने खड़े बैल के दाँत गिनने को कहा। छात्र देखकर हतप्रभ रह गया कि बैल के एक जबड़े में एक भी दाँत नहीं था। परीक्षक ने समझाया कि कोई भी शाखा अच्छी या बुरी नहीं होती। तुम इसी शाखा में रूचि उत्पन्न करो। परीक्षक की इस प्रेरणा से अभिभूत हो वह छात्र भविष्य में इसी शाखा में रूचि लेने लगा और एक महान वैज्ञानिक सिद्ध हुआ। अतः पढ़ाए जाने वाले विषयों और सिखाए जाने वाली क्रियाओं में शिक्षार्थियों की रूचि जागृत कर उन्हें उनके अध्ययन एवं प्रशिक्षण की ओर आकर्षित किया जा सकता है। रूचि जागृत करने एवं बढ़ाने के लिए यह जरूरी हो जाता है कि हम छात्र एवं छात्राओं की रूचि का मापन करें।

उद्देश्य

उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की रूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना। परिकल्पना– उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की रूचि में सार्थक अन्तर पाया जायेगा।

परिसीमांकन

शोध कार्य हेतु भिलाई नगर के विभिन्न विद्यालयों में से 6 विद्यालयों को न्यादर्श हेतु चयन किया गया। इन विद्यालयों में से 120 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चुना गया, जिसमें छात्रों की कुल संख्यास 60 एवं छात्रों की कुल संख्या 60 है।

अध्ययन पद्धति

शोध हेतु अनुसूची विधि एवं अवलोकन विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु अर्थात् छात्र एवं छात्राओं की रूचि मापन हेतु डॉ. (श्रीमती) एस. के बाबा द्वारा निर्मित बहुक्षेत्रीय रूचि अनुसूची का उपयोग किया गया है। बहुक्षेत्रीय रूचि अनुसूची में रूचि के 5 क्षेत्रों से सम्बन्धित प्रश्न है। ये क्षेत्र हैं– व्यावसायिक रूचि, धार्मिक रूचि, सामाजिक रूचि, बौद्धिक रूचि एवं मनोरंजन रूचि।

परिणाम एवं विश्लेषण

निर्मित परिकल्पना की सत्यता की जाँच हेतु उपकरण के प्रशासन व फलांकन से प्राप्त आँकड़ों को व्यवस्थित करने के पश्चात् उसका मध्यमान, प्रमाणिक विचलन ज्ञात करने रूचि की सार्थकता की जाँच 'टी' परीक्षण द्वारा की गई जिसे निम्न तालिका में प्रदर्शित किया गया है–

तालिका 1

संख्या क्र.	विद्यार्थी	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक मूल्य	'टी' मूल्य	परिणाम
1	छात्र	60	7.83	12.40	–0.98	सार्थक अन्तर पाया गया
2	छात्रा	60	10.05	12.30		

df=118 स्वीकृत

उपर्युक्त तालिका के आँकड़ों को आधार पर स्पष्ट होता है कि df = 118 के लिए 'टी' मूल्य तालिका मान 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक है, फलस्वरूप प्रतिपादित परिकल्पना स्वीकृत होती है। अतः उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की रूचि में सार्थक अन्तर पाया गया।

सुझाव

1. आयु के साथ–साथ बालकों एवं बालिकाओं की रूचियों में परिवर्तन होता जाता है। अतः शिक्षक को इन रूचियों के अनुकूल पाठ्य–विषय का आयोजन करना चाहिए।
2. छात्रों को खेल और रचनात्मक कार्यों में विशेष रूचि होती है। अतः शिक्षक को खेल विधि का प्रयोग करना चाहिए और छात्रों से विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ बनवानी चाहिए।
3. बालिकाओं की आवश्यकतानुसार उचित पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सारस्वत मालती व गौतम एस. एल.– 2006: भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामायिक समस्यायें, लखनऊ आलोक प्रकाशन।
2. भटनागर ए.बी., भटनागर मीनाक्षी एवं भटनागर अनुराग–2005, आर.लाल.बुक डिपो।
3. जर्नल ऑफ कम्युनिटी, गाइडेंस एण्ड रिसर्च–मार्च 2008, नीलकमल पब्लिकेशन।
4. इंटरनेट साइट्स।